मॉड्यूल '1' – कहानीः विशेष अध्ययन
(एम.एच.डी.: 9 से 12 तक)

एम.एच.डी.–09
कहानीःस्वरूप और विकास
सत्रीय कार्य
(सभी खंडों पर आधारित)

पाठ्यक्रम कोड : एम.एच.डी.–09
सत्रीय कार्य कोड : एम.एच.डी.–09/टी.एम.ए./2020–2021
कुल अंक : 100

खंड 'क'

निम्नलिखित में से किन्हीं चार प्रश्नों के उत्तर दीजिए। 15×4=60

1. आधुनिक विधा के रूप में कहानी के विकास पर प्रकाश डालिए।

2. हिंदी गद्य कथा के विकास में पाठक वर्ग की भूमिका पर विचार कीजिए।

3. हिंदी कहानी की आलोचना परंपरा पर प्रकाश डालिए।

4. प्रेमचंद कालीन हिंदी कहानी की प्रमुख प्रवृत्तियों को रेखांकित कीजिए।

5. समकालीन हिंदी कहानी पर भूमंडलीकरण एवं बाजारवाद के प्रभावों का मूल्यांकन कीजिए।

खंड 'ख'

6. निम्नलिखित पर टिप्पणी लिखिए : 10×4=40

   (क) कहानी का स्वभाव या चरित्र

   (ख) पश्चिम एशिया में कहानी

   (ग) विभाजन और भारतीय कहानी

   (घ) साठोत्तरी हिंदी कहानी

एम.एच.डी.–10

प्रेमचंद की कहानियाँ
सत्रीय कार्य
(सभी खंडों पर आधारित)

पाठ्यक्रम कोड : एम.एच.डी.–10
सत्रीय कार्य कोड : एम.एच.डी.–10 / टी.एम.ए. / 2020–2021
कुल अंक : 100

सभी प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

1. निम्नलिखित में से किन्हीं दो की संदर्भ सहित व्याख्या कीजिए: 10x2=20

(क) रूपा को अपनी स्वार्थपरता और अन्याय इस प्रकार प्रत्यक्ष रूप में कभी न देखने पड़े थे। वह सोचने लगी–हाय! कितनी निर्दय हूँ। जिसकी सम्पत्ति से मुझे दो सौ रुपया वार्षिक आय हो रही है, उसकी यह दुर्गति! और मेरे कारण! हे दयामय भगवान् मुझसे बड़ी भारी चूक हुई है, मुझे क्षमा करो। आज मेरे बेटे का तिलक था। सैकड़ों मनुष्यों ने भोजन पाया। मैं उनके इशारों की दासी बनी रही। अपने नाम के लिए सैकड़ों रुपये व्यय कर दिये; परंतु जिसकी बदौलत हजारों रुपये खाये, उसे इस उत्सव में भी भरपेट भोजन न दे सकी। केवल इसी कारण तो, यह वृद्धा असहाय है।

(ख) मैं जानता हूँ कि मैं जो कुछ करने जा रहा हूँ वह मेरे लिए हितकर नहीं है; पर न जाने कौन–सी शक्ति मुझे खींचे लिये जा रही है। मैं जाना नहीं चाहता, पर जाता हूँ, उसी तरह जैसे आदमी मरना नहीं चाहता, पर मरता है; रोना नहीं चाहता; पर रोता है। जब सभी लोग, जिन पर हमारी भक्ति है, ओखली में अपना सिर डाल चुके थे, तो मेरे लिए भी अब कोई दूसरा मार्ग नहीं है। मैं अब और अपनी आत्मा को धोखा नहीं दे सकता। यह इज्जत का सवाल है, और इज्जत किसी तरह का समझौता नहीं कर सकती।

(ग) दोनों मित्रों को जीवन में पहली बार ऐसा साबिका पड़ा कि सारा दिन बीत गया और खाने का एक तिनका भी न मिला। समझ में ही न आता था, यह कैसा स्वामी है। इससे तो गया फिर भी अच्छा था। यहाँ कई भैंसें थीं, कई बकरियाँ, कई घोड़े, कई गधे;, पर किसी के सामने चारा न था, सब जमीन पर मुरदों की तरह पड़े थे। कई तो इतने कमजोर हो गये थे कि खड़े भी न हो सकते थे। सारा दिन दोनों मित्र फाटक की ओर टकटकी लगाये ताकते रहे; पर कोई चारा लेकर आता न दिखायी दिया। तब दोनों ने दीवार की नमकीन मिट्टी चाटनी शुरू की, पर इससे क्या तृप्ति होती?

2. वर्ण व्यवस्था के संबंध में प्रेमचंद की दृष्टि का परिचय दीजिए। 16

3. 'कहानीकार प्रेमचंद' विषय पर एक निबंध लिखिए। 16

4. मनोवैज्ञानिकता के परिप्रेक्ष्य में प्रेमचंद की कहानी–कला का विश्लेषण कीजिए। 16

5. 'गुल्ली–डंडा' कहानी में प्रयुक्त सम्प्रेषण–विधि की विशेषताएँ बताइए। 16

6. दलित विमर्श के संदर्भ में प्रेमचंद की कहानियों का विवेचन कीजिए। 16

एम. एच. डी.–11
हिन्दी कहानी
सत्रीय कार्य
(सभी खंडों पर आधारित)

पाठ्यक्रम कोड : एम.एच.डी.–11
सत्रीय कार्य कोड : एम.एच.डी.–11 / टी.एम.ए. / 2020–2021
कुल अंक : 100

सभी प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

1. निम्नलिखित में से किन्हीं दो की संदर्भ सहित व्याख्या कीजिए: 10x2=20

(क) क्या जवाब दे पलटदास। हिरामन ने उसको चेतावदी दे दी थी, गपशप होशियारी से करना। वह चुपचाप गाड़ी की आसनी पर जाकर बैठ गया, हिरामन की जगह पर। हीराबाई ने पत्नी पूछा ''तुम भी हिरामन के साथ हो?'' पलटदास ने गरदन हिलाकर हामी भरी। हीराबाई फिर लेट गयी।.....चेहरा–मोहरा और बोली–बानी देख–सुनकर, पलटदास का कलेजा काँपने लगा; न जाने क्यों। हाँ! रामलीला में सिया सुकुमारी इसी तरह थकी लेटी हुई थी। जै सियावर रामचन्द्र की जै!...पलटदास के मन में जै–जैकार होने लगा। वह दास–बैस्नव है। कीर्तनिया है। थकी हुई सीता महारानी के चरण टीपने की इच्छा प्रकट की उसने, हाथ की उँगलियों के इशारे से; मानों हारमोनियम की पटरियों पर नचा रहा हो। हीराबाई तमककर बैठ गयी–''अरे, पागल है क्या? जाओ, भागो!....''

(ख) आज लग रहा है, तुम्हारे प्रति मेरे मन में जो भी भावना है वह प्यार नहीं, केवल कृतज्ञता की है। तुमने मुझे उस समय सहारा दिया था, जब अपने पिता और निशीथ को खोकर मैं चूर–चूर हो चुकी थी। सारा संसार मुझे वीरान नजर आने लगा था, उस समय तुमने अपने स्नेहिल स्पर्श से मुझे जिला दिया; मेरा मुरझाया, मरा मन हरा हो उठा; मैं कृत–कृत्य हो उठी, और समझने लगी कि मैं तुमसे प्यार करती हूँ। पर प्यार की बेसुध घड़ियाँ, वे विभोर क्षण, तन्मयता के पल, जहाँ शब्द चुक जाते हैं, हमारे जीवन में कभी नहीं आये तुम्ही बताओ, आये कभी? तुम्हारे असंख्य आलिंगनों और चुम्बनों के बीच भी एक क्षण के लिए भी तो मैंने कभी तन–मन की सुध बिसरा देनेवाली पुलक या मादकता का अनुभव नही किया।

(ग) मैं सड़क पार कर लेता हूँ। जंगली, बेमहक लेकिन खूबसूरत विदेशी फूलों के नीचे ठहर–सा जाता हूँ कि जो फूल, भीत के पासवाले अहाते की आदमकद दीवार के ऊपर फैल, सड़क के बाजू पर बाँहें बिछाकर झुक गये हैं। पता नहीं कैसे, किस साहस से व क्यों, उसी अहाते के पास बिजली का ऊँचा खम्भा–जो पाँच–छह दिशाओं में जानेवाली सूनी सड़कों पर तारों की सीधी लकीरें भेज रहा है–मुझे दीखता है और एकाएक ख्याल आता है कि दुमंजिला मकानों पर चढ़ने की एक ऊँची निसैनी उसी से टिकी हुई है। शायद, ऐसे मकानों की लम्ब–तडंग भीतों की रचना अभी भी पुराने ढंग से होती है।

2. ‘राजा निरबंसिया’ कहानी के माध्यम से सामंती मूल्यों से मुक्ति की छटपटाहट और नए मूल्यों के स्वीकार के बीच द्वन्द्व को स्पष्ट कीजिए। 16

3. ग्रामीण यथार्थ के संदर्भ में ‘हंसा जाई अकेला’ कहानी का मूल्यांकन करिए। 16

4. ‘यही सच है’ कहानी में अभिव्यक्त प्रेम–संवेदना के यथार्थ को विश्लेषित कीजिए। 16

5. ‘स्त्री स्वतंत्रता’ के संदर्भ में ‘हरी बिंदी’ कहानी पर विचार कीजिए। 16

6. ‘पार्टीशन’ कहानी के माध्यम से ‘कुर्बान भाई’ के चरित्र पर प्रकाश डालिए। 16

एम. एच. डी.–12

भारतीय कहानी

सत्रीय कार्य

(सभी खंडों पर आधारित)

पाठ्यक्रम कोड : एम.एच.डी.–12
सत्रीय कार्य कोड : एम.एच.डी.–12/टी.एम.ए./2020–2021
कुल अंक : 100

सभी प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

1. निम्नलिखित में से किन्हीं दो की संदर्भ सहित व्याख्या कीजिए: 10x2=20

(क) चेन्नम्मा ने मुंह न खोला। सिर फिर से झुका लिया। मेरे देखते ही देखते आंसू की दो चमचमाती बूंदें उसके गालों पर से फिसल गईं। वही उसका दिया मौन उत्तर था। उसकी शुभ्र आत्मा को घेरे अज्ञान के पर्दे को उतार फेंकना मेरा काम था। किसी भी स्थान पर पहुंचने के लिए एक रास्ता पकड़कर उस पर कदम रखकर चलते–चलते वह स्थान समीप ही आएगा, इस विश्वास में बहुत दूर चलने के बाद कोई रास्ते में मिले और यह कहे कि हम जिस रास्ते पर चल रहे हैं। वह ठीक रास्ता नहीं, बल्कि हम अपने गंतव्य से दूर चले जा रहे हैं, तो कैसा लगेगा? मैंने अपनी बातों से चेन्नम्मा के मन पर लगभग ऐसा ही प्रभाव उत्पन्न किया था।

(ख) ''यह कौन लोग हैं?'' तविटम्मा ने पूछा। शहरों में जात–पाँत की बात जल्दी से पता नहीं चल पाती। यहाँ बात सारी ओहदे की होती है। सुनते हैं कि शहर में उनको कोई बहुत बड़ा काम है। उनके अपने इस्तेमाल के लिए एक और उनके परिवारवालों के इस्तेमाल के लिए एक, कुल दो कारें उनके पास हैं। यह बताकर सत्यवती ने आगे–आगे चल रही अम्माजी से पूछा, ''क्यों री अम्माजी! यह साहब काम क्या करते हैं?''

(ग) देवी के सामने लोग इकट्ठे हुए। देवी की पूजा हुई पंडित ने सिंदूर दिया, सब ने टीका लगाया। लेडेंग गांव के मुखिया ने एक जोशीला भाषण दिया। लेडेंग घाटी कितनी शांत, कितनी सुरक्षित थी, उसके बाद बाघिन ने कितने उपद्रव किए हैं। बाघिन के विरुद्ध कितने सारे अभियोग मुखिया ने लगाए, उन्हें जबानी तौर पर प्रमाणित किया, बाघिन को अपराधिन घोषित किया, उसे मृत्युदंड की सजा सुनाई, संवाद की विवृति की घोषणा भी की। उसके ठीक बाद धनू पंडित ने भी वहीं बातें कहीं। और भी कुछेक लोग भाषण देने को छटपटाए, हाथी भर ऊंचाई की जिस चट्टान पर भाषण दिए गए, उस पर चढ़ने के लिए कुछ ठेल–पेल भी मची। ऊपर से देखा तो एक साथ इतने लोगों के सिर दिखे कि थाली फेंकने की पर वह नीचे न गिरे। धूर्व सिंह उस तरफ देखकर ऊपर से चिल्लाया।

2. 'दीदी'कहानी के विभिन्न आयामों को स्पष्ट कीजिए। 16

3. कालीपट्नम रामाराव की कहानियों में व्यक्त सामाजिक–दृष्टि का परिचय दीजिए। 16

4. 'अपने लिए शोकगीत' कहानी का विश्लेषण करिए। 16

5. पंजाबी कहानी परंपरा में अमृता प्रीतम का स्थान निर्धारित करिए। 16

6. 'एक अविस्मरणीय यात्रा' कहानी की मूल संवेदना के विषय में अपना मत विस्तार से लिखिए। 16